संपादकीय

फिर भी भारत बेटों पर मोहित

देशकाल-परिस्थितियों और बदलती जरूरतों के अनुरूप वैश्विक स्तर पर एक सूक्ष्म, लेकिन महत्वपूर्ण बदलाव दृष्टिगोचर हो रहा है। यह बदलाव लिंग प्राथमिकताओं को लेकर वैश्विक दृष्टिकोण में आ रहे परिवर्तन का है। जैसा कि हाल ही में 'द इकनॉमिस्ट' द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट में कहा गया है कि लड़कों के प्रति सदियों पुराना झुकाव अब कम हो रहा है। दुनियाभर में, अतिरिक्त पुरुष जन्म की संख्या- जो वर्ष 2000 में 1.7 मिलियन तक अधिक थी, साल 2025 तक लगभग दो लाख तक गिर गई है। निस्संदेह, यह प्रजनन विकल्पों में एक अप्रत्याशित बदलावों का संकेत है। यहां तक कि दक्षिण कोरिया और चीन में, लिंग अनुपात सामान्य या यहां तक कि बेटी की पसंद के संकेत दिखाने लगा है। ऐसे में सवाल उठना स्वाभाविक है कि इस बदलाव की असल वजह क्या हैज दरअसल, माता-पिता में यह धारणा बलवती होती जा रही है कि बेटियां उनकी ढलती उम्र में धीरे-धीरे अधिक विश्वसनीय देखभाल करने वाली साबित हो सकती हैं। उन्हें परिवार से गहरे तक जुड़े रहने की अधिक संभावना के रूप में देखा जाने लगा है। आज बेटियों को बेटों के मुकाबले बेहतर शैक्षणिक प्रदर्शनकर्ता के रूप में देखा जा सकता है। तेजी से कामकाजी दुनिया का हिस्सा बनने के कारण वह आर्थिक रूप से स्वावलंबी होती जा रही है। बल्कि कई देशों में तो महिलाओं की बैचलर डिग्री की संख्या तक पुरुषों की तुलना में अधिक है। पश्चिमी देशों में गोद लेने और आईवीएफ के डेटा दिखाते हैं कि बेटियों को चुनने की दिशा में स्पष्ट झुकाव है। दरअसल, पश्चिमी देशों के एकल परिवारों में बेटे अपनी गृहस्थी बसाकर मां-बाप को उनके भाग्य पर छोड़ जाते हैं। ऐसा माना जाने लगा है कि बेटियां बेटों के मुकाबले में ज्यादा संवेदनशील होती हैं और जीवन के अंतिम पड़ाव में मां-बाप को सुरक्षा कवच प्रदान कर सकती हैं। जिसके चलते लोग बेटों के मुकाबले बेटियों को अपनी प्राथमिकता बनाने को तरजीह देने लगे हैं। वहीं भारत में परिस्थितियां एक जटिल तसवीर प्रस्तुत करती हैं। यूं तो सदियों से भारत का समाज पुत्र मोह की ग्रंथि से ग्रस्त रहा है। हालांकि, अब आधिकारिक आंकड़े बता रहे हैं कि देश में शिशु लिंग अनुपात दर में सुधार हुआ है। लेकिन लिंग चयन के लिये किए जाने वाले गर्भपात पर शासन व प्रशासन की कानूनी सख्ती और जागरूकता अभियानों के बावजूद परंपरागत रूप से समाज में गहरी जड़ें जमाने वाला बेटा मोह अब भी प्राथमिकता बना हुआ है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण-5(2019-21) का सर्वे चिंता बढ़ाने वाला है। सर्वे के अनुसार, लगभग 15 फीसदी भारतीय माता-पिता अभी भी बेटियों की तुलना में बेटों की आकांक्षा रखते हैं। यही वजह है कि हरियाणा,पंजाब और उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में विषम शिशु लिंगानुपात चिंता का विषय बना हुआ है। इसके अलावा, भारत में बेटी वरीयता, जहां यह मौजूद है, अक्सर सशर्त होती है। लड़कियों को भावनात्मक लगाव या घरेलू स्थिरता के लिये तो महत्व दिया जा सकता है।

विनोद शर्मा, संपादक

ऐसे तो ट्रंप को नहीं मिलेगा नोबेल शांति पुरस्कार

ऐसा ही भारत के रूस से एस-400 मिसाइल सिस्टम खरीदते हुआ था। अमेरिका ने भारत को बार-बार आर्थिक प्रतिबंध लगाने की धमकी दी। उधर भारत ने अमेरिका से लडाकू विमान के इंजन लेने का सौदा किया, किंतु निर्धारित अवधि के काफी बाद भी भारत को इंजन नहीं मिले। इससे साफ हो जाता है कि भारत को अपनी सुरक्षा के लिए ऐसी प्रणाली विकसित करनी होगी तो अमेरिका के दुश्मन देश की हो। यह भी कि उसे अपनी सुरक्षा प्रणाली विकसित करने पर युद्ध स्तर पर काम करना होगा। चीन भारत का दुश्मन देश है। फिर भी वह कभी भारत का सगा नहीं हो सकता। ऐसे में बस रूस ही बचा है। वह भारत का अजमाया और विश्वसनीय दोस्त है। वर्तमान हालात में उस पर भी पूरी तरह से यकीन नहीं किया जा सकता, क्योंकि वह यूक्रेन युद्ध में चीन पर निर्भर होता जा रहा है।ऐसे में हमें होगी। स्वनिर्मित प्रणाली के बूते पर अपनी युद्ध नीति स्वयं बनानी।

अशोक मधुप

अमेरिका के दूसरी बार बने राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प अपने को दुनिया का शांति का अग्रदूत साबित करने में लगे हैं। वे कहते रहे हैं कि भारत-पाकिस्तान युद्ध उनके कहने पर रूका। रूस-यूक्रेन युद्ध रूकवाने के लिए वे प्रयासरत है। वे चाहते हैं कि उन्हें नोबेल शांति पुरस्कार मिले, उधर वह ईरान पर हमला करते हैं। कहते हैं कि उन्होंने बड़ा काम किया है। इससे इजरायल-ईरान युद्ध रूक जाएगा। उनकी करनी और कथनी में जमीन आसमान का फर्क दिख रहा है और लग रहा है कि इस हालात में तो उन्हें शांति के लिए नोबेल पुरस्कार नहीं मिलने वाला। रूस के पूर्व राष्ट्रपति और रूसी सुरक्षा परिषद के उपाध्यक्ष दिमित्री मेदवेदेव ने कहा कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ईरान पर हमला करके एक नया युद्ध शुरू कर दिया है। ऐसे में तो उन्हें इस तरह की सफलता के साथ ट्रंप को नोबेल शांति पुरस्कार नहीं मिलेगा। डोनाल्ड ट्रम्प दूसरी बार पूर्ण बहुमत से सत्ता में आए हैं। पूरे चार वर्ष हैं उनके पास। वे अपने दुश्मनों से दोस्तों को लड़ाकर रास्ते पर रहें या हठ जाएं, उनकी राष्ट्रपति वाली कुर्सी पर कोई फर्क नहीं पड़ता। रूस और ईरान अमेरिका के परंपरागत शत्रु हैं। उन्होंने नाटो देशों के साथ मिलकर यूक्रेन को ताकतवर रूस से भिड़ा दिया, इससे यूक्रेन तो बर्बाद हो ही गया। रूस की भी बड़ी शक्ति इस लड़ाई में व्यय हो रही है। हाल ही में अमेरिका ने ईरान के तथाकथित तीन परमाणु ठिकानों पर हमला किया। ट्रंप कह रहे हैं कि ईरान के पास परमाणु बम है। परमाणु बम बनाने वाले तीनों केंद्रों पर उन्होंने हमला किया है, जबकि अमेरिका की राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार तुलसी गैबार्ड कह रही हैं कि ईरान के पास परमाणु बम नहीं है। पुतिन बता रहे हैं कि ईरान के पास परमाणु बम नहीं है। अमेरिका ने ही इजरायल से कहा कि यहूदियों का खत्मा करने के लिए ईरान ने परमाणु बम

बना लिया है, यह कह कर उसने इजरायल को ईरान से भिड़ा दिया । अमेरिका के इस हमले के बाद रूस और चीन का क्या रवैया रहेगा, यह अभी स्पष्ट नहीं हुआ, हो सकता है कि यह खुल कर ईरान के साथ न आएं किंतु युद्ध सामग्री और तेजी से ईरान को उपलब्ध कराएंगे। ईरान की जरूरत के घातक हथियार उसे बेचेंगे। किंतु अगर ये खुलकर सामने आ गए तो है कि यह युद्ध तीसरे विश्व युद्ध में बदल सकता है। लगता है कि ट्रंप ने ईरान में हमला करके पूरे विश्व की शांति को खतरे में डाल दिया। इससे सारे मुस्लिम देश एक मोर्चे पर आ जाएंगे। उम्मीद है कि इस हमले के बाद यमन के मुस्लिम आंतकी संगठन अमेरिका के विरूद्ध एकजुट हो जाएंगे। अमेरिका ने रूस को तोड़ने के लिए ओसामा बिन लादेन जैसे आंतकी को इस्तेमाल किया। उन्हें प्रश्य दिया। अमेरिका के इराक पर हमले से लादेन नाराज हो गया। उसने अमेरिका के ट्रेड सैंटर पर हमला कर इसका बदला लिया। अब फिर मुस्लिम आंतकी संगठन एक हो अमेरिका के विरूद्ध खड़े हो जाएंगे। इस क्षेत्र में ईरान के सहयोगी मिलीशिया, जिनमें यमन में हूती, लेबनान में हिज़्बुल्ला और इराक के सशस्त्र समूह, लड़ाई में शामिल नहीं हुए हैं। पिछले दो साल में उनमें से कई गंभीर रूप से कमज़ोर हो गए हैं, फिर भी वे ईरानी सहयोगी लड़ाई में शामिल हो सकते हैं। इस्लामिक आंतकी संगठन हूती और लेबनान में हिज़्बुल्ला ने दक्षिण में एक महत्वपूर्ण तेल शिपिंग चैनल, रेड सी और बाब एल मंडेब जलडमरूमध्य पहले भी इजरायल समर्थक कटेनर ले जाने वाले जहाज पर पहले भी हमला कर चुके हैं। अब ये जलडमरूमध्य को बंद करके या उसमें यातायात को बाधित करके वैश्विक तेल की कीमतों में तेजी जरूर पैदा कर सकते हैं, जो अब अमेरिकी हमले के बाद और ऊँची जाएगी। यहां से गुजरने वाले अमरिकी समर्थक देशों के शिपिंग कंटेनर पर ही नहीं और भी अमेरिकी समर्थक देशों पर हमले और बढ़ेंगे। जहां तक भारत का सवाल है, इजरायल और ईरान दोनों भारत के घनिष्ट मित्र हैं। भारत का प्रयास होगा कि युद्ध रूके। भारत रूस-यूक्रेन युद्ध के समय से ही कहता आ रहा है कि यह समय युद्ध का नहीं है। ट्रंप भी अब तक भारत के सबसे बड़े मित्रों में से एक थे। लेकिन ट्रंप ने अपने स्वार्थों की खातिर भारत के दुश्मन पाकिस्तान से हाथ मिला लिया। पाकिस्तान से हाथ मिलाने का उसका मंतव्य भी स्पष्ट हो गया। सूचनाएं आ रही है कि ईरान पर हमले के लिए उसने पाकिस्तान के हवाई क्षेत्र का इस्तमाल किया। ट्रंप ने हजारों करोड़ डॉलरों का लालच देकर पाकिस्तान को इस्लामिक जगत में नंगा कर दिया और पाकिस्तान को पता भी न चला? यह तय है कि इसमें बाद अमेरिका पाकिस्तान को और ज्यादा मदद देगा, विमान और शस्त्रों की आपूर्ति करेगा। भारत जो अब तक अमेरिका से आधुनिकतम लड़ाकू विमान और शस्त्र प्रणाली खरीदने की बात कर रहा था। उसे इस घटनाक्रम से चौकस होना होगा। यही वजह है कि भारत अब रूस से 5.5 जनरेशन के फाइटर प्लेन खरीदने की तैयारी में है। यही विमान अमेरिका हमें बेचना चाहता था। भारत पहले ही अपने शस्त्र और युद्धक विमान विकसित कर रहा था, उसे अब और चौकस होकर देश की सुरक्षा की रणनीति बनानी होगी। ईरान ने अभी तक इजरायली हमलों का जवाब मिसाइल-प्रहारों से दिया है, लेकिन उसने पश्चिम एशिया में अमेरिकी सैनिकों या ठिकानों पर हमला करने से परहेज़ किया है। उसने सऊदी अरब या संयुक्त अरब अमीरात जैसे संयुक्त राज्य अमेरिका के सहयोगी अरब देशों पर भी हमला नहीं किया है। शुक्रवार को ईरानी विदेशमंत्री अब्बास अराग़ची ने कहा कि अगर अमेरिका ईरान पर हमला करेगा, तो देश को जवाबी कार्रवाई करने का अधिकार है। ऐसे में यदि ईरान अमेरिका और मित्र देशों पर हमला करता है तो युद्ध भड़क सकता है। एक बात और पूरी दुनिया के देशों को सोचना होगा कि क्या किसी एक देश को ये ठेकेदारी दी जा सकती है कि वह तै करे कि कौन देश कौन सा हथियार रखेगा, कौन सा नहीं। प्रत्येक देश को अधिकार है कि यह अपनी देश की जरूरत के हिसाब से हथियार खरीदे और विकसित करें। अमेरिका और मित्र देश नहीं चाहते थे कि भारत परमाणु बम बनाए। वह उसे आर्थिक प्रतिबंध लगाने के लिए धमका रहे थे। उसके बाद भी भारत ने परमाणु बम का विस्फोट किया था।

गर्मी में ठंडक देने वाले स्वादिष्ट देसी ड्रिंक्स

दीप्ति अंगरीश

माना कि कोल्ड ड्रिंक्स या कार्बोनेटेड ड्रिंक्स स्वादिष्ट होते हैं, लेकिन उनमें मौजूद चीनी, प्रिजर्वेटिव्स और केमिकल्स सेहत के लिए नुकसानदायक होते हैं। बेहतर होगा कि आप ठंडक के लिए कुछ प्राकृतिक और हेल्दी विकल्प अपनाएं। गर्मी में हाइड्रेशन बनाए रखने के लिए सिर्फ पानी पीना काफी नहीं है। इस मौसम में पसीना ज्यादा निकलने लगता है, जिससे शरीर में पानी और जरूरी मिनरल्स की कमी हो जाती है। इसका सीधा असर हमारी ऊर्जा, पाचन, और त्वचा पर पड़ता है। ऐसे में केवल पानी पीना काफी नहीं होता। जरूरी है कि आप ऐसे पेय लें जो न केवल हाइड्रेशन दें, बल्कि शरीर को पोषण भी दें। असल में आपको ऐसे ड्रिंक्स पीने चाहिए, जो शरीर को ठंडक, पोषण और ऊर्जा दें। नारियल पानी, छाछ, फ्लेवर्ड वॉटर और आइस्ड हर्बल टी जैसे नेचुरल ड्रिंक्स से न केवल आप तरोताजा रहेंगे, बल्कि सेहतमंद भी बने रहेंगे। नारियल पानी हल्का, स्वादिष्ट और मिनरल्स से भरपूर होता है। इसमें 94 फीसदी पानी, पोटैशियम, मैग्नीशियम, कैल्शियम और इलेक्ट्रोलाइट्स होते हैं, जो शरीर को तेजी से हाइड्रेट करते हैं। सुबह खाली पेट नारियल पानी पीना पाचन के लिए फायदेमंद होता है। यह स्किन को ग्लोइंग और शरीर को ऊर्जा से भरपूर रखता है। आउटडोर एक्टिविटी के बाद नारियल पानी तुरंत राहत और ताजगी देता है। इसमें मौजूद नेचुरल शुगर और इलेक्ट्रोलाइट्स शरीर की थकान दूर कर तरोताजा बनाए रखते हैं। गर्मियों में दही से बनी छाछ एक बेहतरीन कूलिंग ड्रिंक है। इसमें प्रोबायोटिक्स, विटामिन क्ब12, प्रोटीन और इलेक्ट्रोलाइट्स होते हैं। दोपहर के भोजन के

साथ छाछ पीना गैस, एसिडिटी और ब्लोटिंग से राहत देता है। पुदीना और काला नमक डालकर इसे स्वादिष्ट भी बनाया जा सकता है। कम कैलोरी और हाई हाइड्रेशन के कारण यह वजन नियंत्रित करने में भी मदद करती है। यह खासकर महिलाओं के लिए लाभकारी है क्योंकि यह हार्मोन बैलेंस करने और मूड को बेहतर बनाने में भी मददगार मानी जाती है। अगर आपको सादा पानी पीना उबाऊ लगता है, तो फ्लेवर्ड वॉटर एक मजेदार और सेहतमंद विकल्प है। इसमें ताजे फल, जड़ी-बूटियां, नींबू, खीरा, अदरक आदि मिलाकर स्वाद बढ़ाया जाता है। यह न केवल शरीर को डिटॉक्स करता है, बल्कि विटामिन्स और मिनरल्स से भी भरपूर होता है। ये बाजार के बोतलबंद भी मिलता है। लेकिन फ्लेवर्ड वॉटर घर पर ताजा बनाएं। कोशिश करें कि हर बार नए फ्लेवर आज़माएं–जैसे स्ट्रॉबेरी-बेसिल, संतरा-दालचीनी या तरबूज-पुदीना–ताकि बोरियत न हो और शरीर को भरपूर पोषण मिलता रहे। गर्मियों में गरम चाय की जगह आइस्ड हर्बल टी एक बेहतर विकल्प है। यह शरीर को हाइड्रेट करती है और मानसिक शांति भी देती है। पेपरमिंट, तुलसी, दालचीनी, हिबिस्कस जैसी चायों से बनती है। इसमें शहद और नींबू मिलाकर स्वाद और हेल्थ को बढ़ाया जा सकता है। यह चाय तनाव, ब्लड प्रेशर और पाचन संबंधी समस्याओं में भी राहत देती है।

50 साल पहले इंदिरा गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस ने निर्ममता के साथ की थी संविधान की हत्या

नीरज कुमार दुबे

देश 25 जून, 1975 को तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी द्वारा भारत में लगाए गए आपातकाल की 50वीं बरसी मना रहा है। मोदी सरकार आपातकाल की अवधि के दौरान अमानवीय पीड़ा झेलने वालों के व्यापक योगदान को याद करने के लिये आज के दिन को संविधान हत्या दिवस के रूप में मना रही है तो दूसरी ओर राजनेता हों या मीडियाकर्मी अथवा सामान्य जन, सभी उस दौर को याद कर कांग्रेस को कोस रहे हैं क्योंकि वह देश की सरकार द्वारा अपनी ही जनता पर किये गये अत्याचार की निर्मम पराकाष्ठा थी। उस समय देश में एक लाख से ज्यादा लोगों को जेलों में ठूंस दिया गया था। देश के जितने भी बड़े विपक्षी नेता थे, सभी के सभी सलाखों के पीछे डाल दिए गए थे। राजनीतिक बंदियों की अपने परिवारों से मुलाकात तक पर पाबंदी लगा दी गई थी। नेता ही नहीं अदालतें भी एक तरह से कैद हो चुकी थीं। किसी को जमानत नहीं दी जा रही थी और मानव अधिकारों के उल्लंघन पर स्वतः संज्ञान नहीं लिया जा रहा था। राजनीतिक कार्यकर्ता जेल में मानसिक-शारीरिक यातनाएं सह रहे थे। पुलिस हिरासत और जेलों में मौत हो रही थीं लेकिन कहीं कोई सुनने वाला नहीं था। हम आपको बता दें कि देश में आपातकाल के 1975 में आधिकारिक रूप से लागू होने से पहले, ग्रामीण इलाकों में छोटे बच्चे अक्सर बिना कपड़ों के बेफिक्री से दौड़ते-भागते नजर आते थे। लेकिन आपातकाल के दौरान हालात इतने भयावह हो गए थे कि लोगों ने मासूम बच्चों को भी कपड़े पहनाने शुरू कर दिए थे, यह शालीनता की भावना से नहीं हो रहा था बल्कि जबरन नसबंदी की आशंका से उपजा डर था, जिसने पूरे समाज को जकड़ लिया था।

सामूहिक नसबंदी अभियान की यादें आज भी जीवित बचे पीड़ितों को परेशान करती हैं क्योंकि कई लोगों की नसबंदी जबरदस्ती की गई थी। अकेले 1976 में, पूरे भारत में 80 लाख से अधिक लोगों की नसबंदी की गई थी। इनमें से ज्यादातर पुरुष थे, जिनमें से कई लोगों की नसबंदी स्वैच्छिक नहीं थी। हम आपको बता दें कि 1975 में तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी तानाशाह इसलिए बन गयी थीं और देश पर आपातकाल इसलिए थोप दिया था क्योंकि एक पुराना मामला राजनीतिक रूप से उनके लिए बड़ी मुश्किलों का सबब बन गया था। दरअसल 1971 में हुए लोकसभा चुनाव में इंदिरा गांधी ने अपने मुख्य प्रतिद्वंद्वी राज नारायण को रायबरेली संसदीय क्षेत्र में पराजित किया था। लेकिन चुनाव परिणाम आने के चार साल बाद राज नारायण ने हाईकोर्ट में चुनाव परिणाम को चुनौती दी। उन्होंने दलील दी थी कि इंदिरा गांधी ने चुनाव में सरकारी मशीनरी का दुरुपयोग किया, चुनाव में तय सीमा से अधिक पैसे खर्च किए और मतदाताओं को प्रभावित करने के लिए ग़लत तरीकों का इस्तेमाल किया। मामले पर सुनवाई करते हुए इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने 12 जून 1975 को इंदिरा गांधी को आरोपों में दोषी पाया और छह साल के लिए पद से बेदखल कर दिया तथा इंदिरा गांधी के चिर प्रतिद्वंद्वी राज नारायण सिंह को चुनाव में विजयी घोषित कर दिया था। अदालत के इस फैसले ने देश में बड़ा राजनीतिक तूफान खड़ा कर दिया था। इंदिरा गांधी ने इलाहाबाद हाईकोर्ट के फैसले को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दे डाली थी। सुप्रीम कोर्ट ने इलाहाबाद हाईकोर्ट के आदेश को बरकरार रखा, हालांकि इंदिरा गांधी को प्रधानमंत्री की कुर्सी पर बने रहने की इजाजत दे दी। इस फैसले से विपक्ष में जहां नया जोश आ गया वहीं इंदिरा गांधी बौखला गयी थीं। अपने खिलाफ विपक्ष की एकजुटता और विरोध प्रदर्शन बढ़ते देख इंदिरा गांधी ने 25-26 जून की रात को आपातकाल लगाने का फैसला किया और रात्रि को ही राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली अहमद के दस्तखत के साथ भारत में आपातकाल लागू हो गया। अगली सुबह समूचे देश ने रेडियो पर इंदिरा गांधी की आवाज में संदेश सुना कि भाइयों और बहनों, राष्ट्रपति जी ने आपातकाल की घोषणा की है। लेकिन इससे सामान्य लोगों को डरने की जरूरत नहीं है। लोगों को आपातकाल का मतलब तब समझ आया जब उन्हें पता चला कि उनके सभी मौलिक अधिकारों को स्थगित कर दिया गया है। इसके साथ ही सरकार विरोधी भाषणों और किसी भी प्रकार के प्रदर्शन पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया गया है। इससे जनता नाराज हुई और सड़कों पर उतरने लगी लेकिन सड़क पर उतरने वाले हर शख्स को जेलों में ठूंस दिया गया था। हम आपको बता दें कि आपातकाल के दौरान तत्कालीन इंदिरा गांधी सरकार ने देश में कुल 48 अध्यादेश लागू किए थे जिसमें आंतरिक सुरक्षा कानून अधिनियम (मीसा) में संशोधन के लिए लाए गए पांच अध्यादेश भी शामिल थे। प्रशासन को बिना किसी वारंट के किसी भी व्यक्ति को गिरफ्तार करने का अधिकार देने वाले इस कानून को अक्सर 'दमनकारी' कानून की संज्ञा दी जाती है। पचास वर्ष पहले 25 जून 1975 को लगाया गया आपातकाल 21 महीने जारी और इस दौरान सरकार ने कई बार संविधान में बदलाव किए जिसमें राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और लोकसभा अध्यक्ष के चुनाव को न्यायालयों के अधिकार क्षेत्र से बाहर रखा गया तथा संविधान की प्रस्तावना में समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष और अखंडता जैसे शब्द जोड़े गए। विभिन्न कानूनों में संशोधनों से सत्ता संतुलन केंद्र सरकार के पक्ष में हो गया और न्यायपालिका की शक्तियों में कटौती कर दी गई। देश में आपाताकाल लागू होने पर कुछ ही दिनों के भीतर 29 जून 1975 को सरकार ने मीसा में बदलाव करने के लिए पहला अध्यादेश जारी किया था। आपातकाल के दौरान मीसा (संशोधन) अध्यादेश को और चार बार लागू किया गया तथा संसद द्वारा उसे मंजूरी दे दी गई।

आस्था, भक्ति और सामाजिक समरसता का भव्य उत्सव है भगवान जगन्नाथ रथयात्रा

शुभा दुबे

भारत की सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत में भगवान जगन्नाथ की यात्रा एक अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखती है। हर वर्ष ओडिशा के पुरी नगर में आयोजित होने वाली जगन्नाथ रथ यात्रा न केवल एक धार्मिक अनुष्ठान है, बल्कि यह आस्था, भक्ति और सामाजिक समरसता का भव्य उत्सव भी है। यह यात्रा भगवान जगन्नाथ, उनके बड़े भाई बलभद्र और बहन सुभद्रा को विशाल रथों में श्रीमंदिर से बाहर लाकर जनसामान्य के दर्शन हेतु निकाली जाती है। भगवान जगन्नाथ को भगवान विष्णु या श्रीकृष्ण का अवतार माना जाता है। रथ यात्रा का आयोजन आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि को होता है, जिसे रथ द्वितीया कहा जाता है। यह परंपरा सदियों पुरानी है और कहा जाता है कि यह यात्रा 12वीं सदी से भी पहले शुरू हो चुकी थी। पुरी के श्रीजगन्नाथ मंदिर की रथ यात्रा विश्व प्रसिद्ध है और इसे देखने के लिए देश-विदेश से लाखों श्रद्धालु पुरी पहुंचते हैं। इस उत्सव की भव्यता और अध्यात्मिक ऊर्जा को देखकर हर कोई मंत्रमुग्ध हो जाता है। तीन रथ– भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा के लिए अलग-अलग विशाल रथ बनाए जाते हैं। ये रथ हर साल नए लकड़ी से तैयार किए जाते हैं। भगवान जगन्नाथ के रथ का नाम नंदिघोष, बलभद्र के रथ का नाम तालध्वज और सुभद्रा के रथ का नाम दर्पदलन होता है, इसे पद्म ध्वज नाम से भी पुकारा जाता है। गुंडिचा मंदिर यात्रा– रथ यात्रा के दौरान भगवान अपने भाई-बहन के साथ श्रीमंदिर से करीब 3 किलोमीटर दूर स्थित गुंडिचा मंदिर जाते हैं। वहां वे सात दिन तक विश्राम करते हैं और फिर बहुड़ा यात्रा के माध्यम से वापस आते हैं। छेरा पहरा– पुरी के गजपति महाराज स्वयं सोने की झाडू से रथ की सफाई करते हैं। इसे 'छेरा पहरा' कहा जाता है और यह राजा द्वारा भगवान के प्रति अपनी सेवा और समर्पण का प्रतीक है। जगन्नाथ यात्रा केवल एक धार्मिक पर्व नहीं है, यह भारतीय समाज की समरसता, समानता और एकता का प्रतीक भी है। इस उत्सव में जाति, वर्ग, धर्म और लिंग की सीमाएं टूट जाती हैं। सभी लोग मिलकर रथ को खींचते हैं और भगवान के दर्शन करते हैं। इस यात्रा का एक प्रमुख संदेश यह है कि भगवान सभी के हैं और वे

स्वयं जनता के बीच आकर उन्हें दर्शन देते हैं। पुरी की रथ यात्रा विश्व की सबसे बड़ी चलती तीर्थयात्राओं में से एक मानी जाती है। रथयात्रा में सबसे आगे ताल ध्वज पर श्री बलराम, पीछे पद्म ध्वज रथ पर माता सुभद्रा व सुदर्शन चक्र और अंत में गरुण ध्वज पर या नंदीघोष नाम के रथ पर श्री जगन्नाथ जी सबसे पीछे चलते हैं। तालध्वज रथ 65 फीट लंबा, 65 फीट चौड़ा और 45 फीट ऊँचा है। इसमें 7 फीट व्यास के 17 पहिये लगे होते हैं। संध्या तक तीनों ही रथ मंदिर पहुँचते हैं। भगवान मंदिर के सिंहद्वार पर बैठकर जनकपुरी की ओर रथयात्रा करते हैं। जनकपुरी में तीन दिन का विश्राम होता है जहां उनकी भेंट श्री लक्ष्मीजी से होती है। इसके बाद भगवान पुनः श्री जगन्नाथ पुरी लौटकर आसनरुढ़ हो जाते हैं। श्री जगन्नाथ जी के प्रसाद को महाप्रसाद माना जाता है जबकि अन्य तीर्थों के प्रसाद को सामान्यतः प्रसाद ही कहा जाता है। श्री जगन्नाथ जी के प्रसाद को महाप्रसाद का स्वरूप महाप्रभु बल्लभाचार्य जी के द्वारा मिला। दस दिवसीय यह रथयात्रा भारत में मनाए जाने वाले धार्मिक उत्सवों में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। भगवान श्रीकृष्ण के अवतार जगन्नाथ की रथयात्रा का पुण्य सौ यज्ञों के बराबर माना जाता है। यात्रा की तैयारी अक्षय तृतीया के दिन श्रीकृष्ण, बलराम और सुभद्रा के रथों के निर्माण के साथ ही शुरू हो जाती है। जगन्नाथ जी का रथ गरुड़ध्वज या कपिलध्वज कहलाता है। रथ पर जो ध्वज है, उसे त्रैलोक्यमोहिनी या 'नंदीघोष' रथ कहते हैं। रथ ध्वज नदंबिक कहलाता है। इसे खींचने वाली रस्सी को स्वर्णचूडा कहते हैं। जगन्नाथ जी की रथयात्रा में भगवान श्रीकृष्ण के साथ राधा या रुक्मिणी नहीं होतीं बल्कि बलराम और सुभद्रा होते हैं।

स्वामी, भाग्यमीडिया पब्लिकेशन प्रा. लि. के लिए प्रकाशक, मुद्रक राजेश शर्मा द्वारा प्रदेश वॉच मीडिया ग्रुप 11 प्रेस काम्पलेक्स जोन-1 एम.पी. नगर भोपाल (म.प्र.) से मुद्रित कर, जी-11 प्रथम तल गोयल निकेत जोन-1 एम.पी. नगर भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित, पिन-462011, संपादक : विनोद शर्मा, फोन नं. 0755-4512708, पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार सभी मामलों का न्याय क्षेत्र भोपाल होगा । RNI No. MPHIN/2016/68059